वेदों में आयुर्विज्ञान का विवेचन

सुरेखा जैसवार

संसार में जितने भी साहित्य उपलब्ध हैं, उनमें सबसे प्राचीन वेद हैं। वेदों का पाश्चात्य जगत एवं भारत में अपूर्व सम्मान है। इसमें सभी विद्याओं का समावेश है यथा ज्योतिष, व्याकरण, साहित्य, छन्द और आयुर्वेद आदि। आरम्भिक आयुर्विद्या की स्रोतस्विनी यही से प्रवाहित हुई थी। आयु से सम्बन्धित ज्ञान को आयुर्वेद कहते हैं। चरक ने आयुर्वेद का लक्षण दिया है–**आयुर्वेदयदि इति आयुर्वेदः।** जो आयु का ज्ञान कराता है वह आयुर्वेद है। प्राचीन आयुर्वेद शास्त्री आचार्य सुश्रुत के कथनानुसार जिसमें या जिसके द्वारा आयु प्राप्त हो, आयुवृद्धि के सम्बन्ध में ज्ञान प्राप्त हो उस शास्त्र को आयुर्वेद कहते है।

आयुर्वेद अष्टांग तन्त्र का प्रतिपादक होते हुए भी यह शल्य तन्त्र का प्रधान ग्रन्थ है। प्राचीन भारतीय विज्ञान का जैसा विस्तृत एवं तथ्यपरक विवरण इस ग्रन्थ में प्राप्त होता है वैसा अन्यत्र नहीं। मानव जीवन के लिए चिकित्सा शास्त्र की उपयोगिता को तत्कालीन ऋषिगणों ने समझा और उसे सुखी बनाने वाले इस शास्त्र का वैज्ञानिक रीति से अध्ययन किया।